

चसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II--लण्ड 3--उपसण्ड (ii)

PART II Section 3 Sub-section

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

₩o 237]

नई बिल्लो, शनिवार, मई 6, 1972/वैशास 16, 1894

No. 7237]

NEW DELHI, SATURDAY, MAY 6, 1972 VIASAKHA 16, 1894

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संस्था दी जाती है जितसे कि यह अलग संकलन के कप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF AGRICULTURE

(Department of Agriculture)

ORDER

New Delhi, the 6th May 1972

S.O. 342(E).—Whereas the Central Government is of opinion that it is necessary so to do for maintaining and increasing supplies of milk and for securing its equitable distribution in the areas comprising the Union Territory of Delhi and the Districts of Meerut and Buland hahr in the State of Uttar Pradesh.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 3 of the Essential Commodities Act, 1955 (10 of 1955), the Central Government hereby makes the following Order, namely:—

- 1. Short title, extent and commercement.—(1) This Order may be called the Delhi, Mecrut and Bulandshahr Milk and Milk Products Centrol Order, 1972.
- (2) It extends to the areas comprising the Union Territory of Delhi and the Districts of Meerut and Bulandshahr in the State of Uttar Pradesh.

- (3) It shall come into force on the 7th May, 1972 and shall cease to operate on the 16 h July, 1972 except as respects things done or omitted to be done before such ceaser of operation.
 - 2. Definitions.—In this Order, unless the context otherwise requires:—
 - (a) "controlling officer" means any officer appointed as such by the Government of Uttar Pradesh in respect of the Districts of Meerut and Bulandshahr and by the Delhi Administration in respect of the Union territory of Delhi, to exercise the powers and perform the duties of a controlling officer under this Order;
 - (b) "export" means to take or cause to be taken, by any means whatsoever, out of any place within the areas to which this order extends to any place outside those areas;
 - (c) "milk" means the normal, clean and fresh secretion obtained by milking of the udder of a cow, buffalo, goat or sheep and includes milk with er without fat, butter milk, standardised milk, toned milk, double toned milk or milk prepared from milk powder, but does not include the article commonly known as dried milk or milk powder or condensed milk.
- 3. Prohibition of manufacture, sale, service, supply, export of milk and milk products.—No person shall—
 - (a) use milk of any kind for the manufacture of cream, cascin. skimmed milk, khoa, rubree paneer or any kind of sweets in the preparation of which milk or any of its products except ghee is an ingredient; or
 - (b) export milk of any kind; or
 - (c) sell, serve, supply or export or cause to be sold, served, supplied or exported cream, casein, skimmed milk, khoa, rubree, paneer, or any kind of sweets in the preparation of which milk or any of its products (including dried milk or milk powder or condensed milk), except ghee, is an ingredient;

Provided that nothing in this clause shall apply-

- (i) to the use of milk for the manufacture of and to the sale, service, supply or export of ice cream, kulfi or kulfa, in the preparation of which no khoa, rubree or cream is used;
- (ii) to the export of milk of any kind by a person engaged in the manufacture of intant milk tood.
 - (a) whose undertaking has been registered or licensed under the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), and
 - (b) who has been exporting milk of any kind for the purpose of the manufacture of infant milk tood immediately preceding the commencement of this Order, if he has obtained a permit to that effect from the controlling officer.
- (iii) to the use, by such undertaking as the Central Government may specify in this behalf, or milk for the manufacture of cream as intermedlary stage in the manufacture of butier, ghee, milk powder, and other milk products, if the Central Government, being of opinion that it is necessary so to do in the interest of the Defence Forces, so directs.
- 4. Power of entry, search, retzure, etc.—(1) Any Stipendary Magistrate or any police officer, not below the rank of a head constable may with a view to securing compliance with this Order or to satisfying himself that this Order is being complied with:—
 - (a) stop and search any nerson or any hoot, motor or other vehicle or any receptacle or machinery used or intended to be used for export of milk or for the manufacture of milk products,

- (b) enter and search any place or premises where he has reason to believe that milk is stocked or that they are being used for the manufacture, sale, service or supply of milk products;
- (c) seize or authorise the seizure of any milk or milk products in any place or premises together with packages, coverings receptacles or machinery in which milk or milk products are found or with which such milk products are manufactured, or the animals, vehicles, vessels, boats or other conveyances used in carrying milk or milk products and thereafter take all measures necessary for securing the production of the packages, coverings, receptacles, machinery so selzed in a court and for their safe custody tending such production.
- (2) The provisions of sections 102 and 103 of the Code of Criminal Procedure, 1898 (5 of 1898), relating to search and seizure shall, so far as may be, apply to searches and seizures under this clause.

[No. 19-4/72-LD.I.]

T. P. SINGH, Secy.

इति मंत्रलय (इति बिह्नास)

धादेश

नई दिल्ली, 6 मई, 1972

का॰ ग्रा॰ ३४२ (१८). — यतः केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि दूध के हायों को बनाए रखने भीर बढ़ाने और दिल्ली संघ ाज्यक्षीत्र ग्रांत उत्तर विशा राज्य के भेरट श्रीर दिल्लिश के जिलों के क्षेत्रों में उसका साम्यापूर्ण वितरण मृति-चित करने के लिये ऐसा करना ग्रावस्थक है।

मतः, मन, मावस्यक वरत् मधिनियम, 1955 (1955 का 10) की धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतव्द्वारा निम्नलिखित मादेश करती है, मर्थ तः---

- सिंदिन ना 'तिस्तार प्रंप न परंत्र.—(1) यह झादेश दिल्ली, मेरठ भीर बुलन्दशहर दूध भीर दुग्छ-उत्पाद नियत्रण आदेश, 1972 कहा जा सकेगा।
- (2) इसका विस्तार दिस्ली संघ राज्य क्षेत्र ग्रीर २ तर प्रदेश राज्य के मेण्ट ग्रीर वृक्षध्याहर जिलों के क्षेत्रों पर है।
- (3) यह 7-5-72 को प्रवृत्त हो गा, श्रीर उन बातों के सिवाय जो ऐसे प्रवर्तन की समाध्ति से पूर्व की गई या की जाने से रह गई हैं, 16 जुलाई, 1972 को प्रवृत्त नहीं पहुरा।
 - 2 परि । च : . इस म्रादेश में, जब तक कि संदर्भ से, ध्रन्यथा म्रपेक्षित नहीं :—
- (क) "तिश्व क प्रधिकारी" से वह फ्रिक्षिकारी श्रमिप्रैन है, जिसे मेरट श्रीर बुलन्दणहर जिलों के मम्बन्ध में उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने श्रीर दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र के सम्बन्ध में दिल्ली प्रशासन ने इप प्रादेश के प्रयोग नियंत्र क्षिकितरों को शनितयों का प्रयोग श्रीर कर्तव्यों का पालन करने के लिये इस हैसियत में नियुक्त किया है।
- (ख) "तिर्यात" से ऐने क्षेत्रों के बाहर, जिन पर इप ग्रादेश का विस्तार है. भीतर के किसी क्षेत्र से उन क्षेत्रों के बाहर के किसी क्षेत्र को, किसी भी साधन से, ले जाना या लिया जाना श्राभगेत है

- (ग) "दूध" से अभिनेत है गाय, भैंस, बकरी या भेड़ के थनों से प्राप्त प्रसामान्य, स्वच्छ भीर ताजा सूज श्रीर इसके श्रन्तर्गत बसा सहित या रहित दूध; मट्ठा, मानकित दूध, टोंड का दूध, डबल टोंड का दूध या दुग्ज चुर्ण से बना दूध श्राता है किन्तु इसके श्रन्तर्गत वह वस्तु नहीं है जिसे सामान्यतया सुखाया हुया दूध या दुग्ध चुर्ण या सविनित दूध कहते हुं।
- 3. दूर रोट एर उपारकों के शिनिश्य कि हर, परेस्तो, प्रसाप था निर्मात का प्रति-चे र.— (क) कोम, कै तोन (दूध सत्व), कोम निकले दूध, खोया, रबड़ो, पनीर या किसी भी प्रकार की ऐसी मिठाइयों का, जिन्हें तैयार करने में दूध या उसके किसी उत्पाद का, घो के सिवाय, संघटक के रूप में प्रयोग किया जाता है, विनिर्माण करने के लिये किसी भी प्रकार का दूध का प्रयोग नहीं करेगा; स्थवा
 - (ख) किसी भी प्रकार के दूध का निर्यात नहीं करेगा; प्रथवा
- (ग) कीम, कैसीन, कीम निकला दूध, खोया, रबड़ी पनीर या अन्य किसी प्रकार की मिठाई, जिसे तैंगर करने में घी के िवाय दूध या उसके किसी उत्पाद (सुखाया दूध पर दुग्ध चुर्ण या संवितित दुग्ध) का प्रयोग संवटक के रुप में किया जाता है, न तो बेचेगा, न परोसेगा, न प्रदाय करेगा और न निर्यात करेगा और न हो ऐसा विक्रय, परोसा, प्रदाय या निर्यात करवाएगा:

परन्तु इस खण्ड की कोई भी बात:---

- (1) ऐसी भ्राइसकीम , कुल्फी या कुल्फे के, जिसके तैयार करने में खोया रखड़ी या कीम का प्रयोग नहीं होता , विनिर्माण के लिए दूध के प्रयोग भीर उनके विकय , परोसने या निर्यात को लागू नहीं होगी ;
 - (2) शिशु दुग्ध ग्राहार के विनिर्माण में लगे हुए किसी व्यक्ति द्वारा,
- (क) जिसका उपक्रम, उद्योग (विकास श्रीर विनियमन) श्रिष्ठिनियम, 1951 (1951 का 65) के श्रद्योन रजिस्ट्रीकृत या श्रनुज्ञापित किया गया है, तथा
- (ख) जो शिशु दुग्ध म्नाहार के विनिर्मात के प्रयोजनों के लिए, इस म्रादेश के प्रारम्भ से ठीक पूर्व किसी भी प्रकार के दूध का निर्यात करता रहा है; किसी भी प्रकार के दूध के निर्यात को लागू नहीं होगी यदि उस व्यक्ति ने नियंत्रक म्रधिकारी के उस म्राशय की स्रनुक्तित्र प्राप्त कर ली है।
 - (3) मक्खन, घी, दुग्ध चूर्ण तथा ग्रन्य दुग्ध उत्नादों के विनिर्माण में मध्यवर्ती स्तर पर प्रयोग होने वाली कीम के विनिर्माण में दूध के प्रयोग के लिए ऐसे उपक्रम द्वारा, जो कि केन्द्रीय सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में निर्दिष्ट किया जायेगा, लागू नहीं होगी, वगर्ते कि केन्द्रीय सरकार का, यह विचार हो कि ऐसा करना रक्षा सेनाग्रों के हित में श्रावश्यक है, ऐसा निदेश देती है।
- 4. प्रयोत, तताज्ञी, स्वितित्रहण स्विद्धिकी शक्तियां——(1) कोई भी वैतिनिक मितिस्ट्रेट श्रयवा कोई भी पुरित्य स्विकारी, जो हैडकांस्ट्रेबन से नीचे के दर्जे का न हो इस स्वादेश के सनुगानन को सुनिश्चित करने की दृष्टि ये या स्वाना यह समाधान करने की दृष्टि से कि स्वादेश का स्वतुगानन किया जा रहा है;
- (क) किसी भी व्यक्ति को या किसी नाव, मोटर या अन्य गाड़ी या किसी पात्र या मशीनरी को, जो दूघ के निर्मात के लिए या दुग्ध उत्पादनों के विनिर्माण के लिए प्रयोग में लाई गयी हो या जिसको प्रयोग में लाना ग्राणंकित हो, रोक सकेगा ग्रीर उसको तलाशी ले सकेगा;

- (ख) अहां कि उसे यह विश्वास करने का कारण हो कि दूध का स्टाक किया है या वे चीजें दुग्ध उत्पादों के विनिर्माण, विकय, परोसा या प्रदाय करने के लिए प्रयोग में लायी जा रही है वहां, किसी भी स्थान या परिसर में प्रवेण कर सकेगा और उसकी तलाशी ले सकेगा;
- (ग) किसी भी स्थान या परिसर में कोई दूध या दुग्ध पदार्थ, ग्रौर पैकेज, ग्रावरण, पात्र या मग्रीनरी, जिनसे दूध या दुग्ध पदार्थ पाए जाते हैं या जिन के साथ ऐसे दुग्ध पदार्थ पाए जाएं या जिनसे ऐसे दूग्ध पदार्थ विनिर्मित किए जाते है या दूध या दुग्ध-पदार्थ ले जाने में उपयोग में लाए जाने बाले पगुष्ठों, गाड़ियों, जलयानों या नार्यों या ग्रम्य सवारियों को अभिगृत्तीत कर सकेगा या उनका अभिग्रहण प्राधिकृत कर सकेगा और इस प्रकार अभिग्रहण प्राधिकृत कर सकेगा और इस प्रकार अभिग्रहीत पैकेजों, गावरणों, पाजों या गगीनरी को किसी न्यायालय में पेम करना और अब तक वे पेम व किसे वार्ये तब तक उनकी मुरक्षिम ग्राभिरका मुनिष्मित करने के लिए एतद्शारा तत्पश्चात् सभी भावस्यक उपाय करेगा।
 - (2) देण्ड प्रक्रिया संहिता, 1898 (1898 का 5) की तल्लाशी और अभिग्रहण सम्बन्धी धाराध्रों 102 और 103 के उपजन्म इस खण्ड के श्रधीन तलाशी ग्रीर ग्रामिश्रहणों को यावतमक्ष्य लागु होंगे ।

[संख्या 19-4/72-पशुधन विकास-1]
द्विभुवन प्रसाद सिंह, सजिब।